30

दृष्टांत क्या है?

(अध्याय 13)

अध्याय 13 में मत्ती ने एक बार फिर से बदलाव किया, इस बार फरीसियों के साथ यीशु के झगड़े से लेकर वापस उस की शिक्षा में ले आया। परन्तु इस बार मत्ती का फोकस यीशु के दृष्टांतों पर था।

दृष्टांत क्या होता है? *Parabolē* ''के साथ फैंकना'' के अर्थ वाला एक मिश्रित शब्द है। सरल भाषा में कहें तो दृष्टांत एक उदाहरण है, जिसमें किसी अज्ञात बात को समझाने के लिए ज्ञात सच्चाई का इस्तेमाल किया जाता है। यहां पर, आत्मिक सच्चाइयों को खोजा जाता है। एक प्रसिद्ध परिभाषा का इस्तेमाल करें, तो हम कह सकते हैं कि यह ''स्वर्गीय अर्थ वाली एक सांसारिक कहानी'' है।

दृष्टांतों के साथ सिखाने वाला यीशु पहला व्यक्ति नहीं था। पुराने नियम के समयों में बार- बार इस्तेमाल होने के कारण यह ढंग यहूदी शिक्षा का एक सामान्य रूप था।[1] दृष्टांत के लिए अंग्रेज़ी शब्द ''parable'' के लिए इब्रानी शब्द *mashal* है, और इसका अर्थ ''सूत्र, लोकोक्ति, कहावत, तुलना, रूपक, प्रतीक, पहेली'' हो सकता है।[2] इसी प्रकार *parabolē* ''का इस्तेमाल कहावत (लूका 4:23), पहेली (मत्ती 3:23), तुलना (मत्ती 13:33), भिन्नता (लूका 18:1-8) और सरल कहानियां (लूका 13:6-9) और जटिल कहानियां (मत्ती 22:1-14) दोनों के लिए हो सकता है।''[3] दृष्टांतों के हवाले मसीह के समय से पहले और बाद के अन्य यहूदी लेखों में भी मिलते हैं।[4] यीशु को सिखाने के इस ढंग में महारत हासिल थी और वह इसके इस्तेमाल में मास्टर था।

parabolē शब्द का पहली बार इस्तेमाल लूका 13:3 में मिलता है और उस अध्याय में यह बारह बार मिलता है। मत्ती ने कहा कि यीशु ने ''... दृष्टातों में बहुत सी बातें कहीं'' और बाद में कहा, ''ये सब बातें यीशु ने दृष्टांतों में लोगों से कहीं और बिना दृष्टान्त वह उनसे कुछ न कहता था'' (13:34)। अन्य अवसरों पर उस ने दृष्टांतों का इस्तेमाल किए बिना सिखाया, परन्तु इस अवसर पर उस ने केवल दृष्टांतों में बातें कीं। यीशु के सिखाने का यह ढंग चुनने के दो कारण दिए गए हैं। पहला तो लोगों की आत्मिक सच्चाइयों को समझने में नाकामी का था (13:10-17)। यीशु ने अपने चेलों पर ये सच्चाइयां प्रकट कीं; परन्तु दृष्टांतों के अपने इस्तेमाल के द्वारा उस ने भीड़ के लोगों को उनके मन की कठोरता के कारण उनसे दूर रखा। दूसरा कारण भविष्यवाणी को पूरा करना था कि मसीहा ने ऐसी कहानियों के द्वारा अपनी शिक्षा देनी थी (13:34, 35; भजन संहिता 78:2)।

अध्याय 13 में पन्द्रह बार ''सुनना'' (*akouō*) का कोई न कोई रूप इस्तेमाल किया गया है। यीशु ने ध्यान से सुनने के महत्व पर ज़ोर देने के लिए, जिससे समझ बढ़ती है, अलग-अलग

ताड़नाएं और यहां तक कि आशीष भी दी (13:9, 16, 18, 43)।

इस अध्याय में सात या आठ आपस में जुड़े हुए दृष्टांत मिलते हैं,[5] परन्तु ये तुलनाएं सामान्य नहीं हैं। यीशु ने चेलों को बताया कि दृष्टांत ''स्वर्ग के राज्य के भेदों की समझ'' देने के लिए दिए गए हैं (13:11)। हमारे लिए वे स्वर्ग के राज्य के मूल, उस की प्रगति, उसके बढ़ने और फैलने, उसके महत्व और उसके उद्देश्य को प्रकट करते हैं। वे मसीह और उसके राज्य को ठुकराने वालों के विरुद्ध अन्तिम न्याय की जानकारी भी देते हैं।

अध्याय 13 के दृष्टांतों के बाद यहूदी अगुओं के साथ यीशु के सामनों को दिखाया गया है। इन दृष्टांतों में शब्दचित्रों को रंगा गया है, जिनसे स्वर्ग के राज्य और उसके पीछे चलने के प्रभाव पर उस की शिक्षा को और समझाया गया है। कहानियों में यीशु के सुनने वालों को यह निर्णय लेने की चुनौती दी गई कि वे उसे समर्थन देंगे या केवल फरीसियों को। वे अच्छी ज़मीन होंगे या पथरीली ज़मीन? वे गेहूं होंगे या जंगली बीज? क्या वे परमेश्वर के राज्य को धन या खज़ाने की तरह मानेंगे?

मुख्य प्वाइंटों के साथ दृष्टांतों को इस प्रकार संक्षिप्त किया जा सकता है:

1. *बोने वाला:* परमेश्वर का वचन उन लोगों में बीज की नाईं बोया जाता है, जो उसे अलग-अलग स्तर पर ग्रहण करते हैं।
2. *जंगली बीज:* भलाई और बुराई के बीच का प्रश्न अन्तिम न्याय तक चलता रहेगा।
3. *राई का बीज:* परमेश्वर के राज्य का आरम्भ छोटे से होगा, परन्तु इसमें बहुत बढ़ौतरी हो जाएगी।
4. *खमीर:* परमेश्वर का राज्य समाज में अपने प्रभाव को छोड़ते हुए, फैल जाएगा।
5. *छुपा हुआ धन:* राज्य और इसकी सच्चाई बहुत कीमती है, अपने गुमनाम और गुप्त होने के बावजूद।
6. *कीमती मोती:* राज्य और इसकी सच्चाई लगन से खोज किए जाने के योग्य हैं।
7. *जाल:* अन्तिम न्याय में पता चल जाएगा कि परमेश्वर के राज्य के लोग वास्तव में कौन हैं?
8. *गृह स्वामी:* जो यीशु की बातों को ग्रहण करता और उनमें बना रहता है वह आत्मिक रूप में बलवान बन जाएगा।[6]

इस अध्याय को बड़े ध्यान से बनाया गया है, जिसमें एक परिचायक दृष्टांत और एक अन्तिम दृष्टांत है। दो बार यीशु के दृष्टांतों का उद्देश्य दिया गया है और दो दृष्टांतों की व्याख्या की गई है। अध्याय में अन्य दृष्टांत तीन-तीन के दो सैटों में हैं। अध्याय की सामग्री निम्न रूपरेखा में आती है:[7]

I. एक परिचायक दृष्टांत: बोने वाला (13:1-9)
II. एक विराम (13:10-23)
   क. दृष्टातों का उद्देश्य (13:10-17)
   ख. बोने वाले के दृष्टांत की व्याख्या (13:18-23)

III. तीन दृष्टांत (13:24-33)
   क. जंगली बीज (13:24-30)
   ख. राई का बीज (13:31, 32)
   ग. खमीर (13:33)
IV. एक विराम (13:34-43)
   क. दृष्टांतों का उद्देश्य (13:34, 35)
   ख. जंगली बीज के दृष्टांत की व्याख्या (13:36-43)
V. तीन दृष्टांत (13:44-50)
   क. छुपा हुआ धन (13:44)
   ख. कीमती मोती (13:45, 46)
   ग. जाल (13:47-50)
VI. एक अन्तिम दृष्टांत: गृहस्वामी (13:51, 52)

टिप्पणियां

[1]देखें न्यायियों 9:7-20; 2 शमूएल 12:1-14; 2 राजाओं 14:8-14; यशायाह 5:1-7; 27:2-6; यिर्मयाह 13:1-11; यहेजकेल 15:1-8; 17:1-10; 19:1-14; 23:1-49. इनमें से कुछ उदाहरण जिन्हें रूपक कहा जा सकता है, दृष्टांत या विलाप का काम कर सकते हैं। [2]डेविड हिल, द *गॉस्पल ऑफ़ मैथ्यू,* द न्यू सेंचुरी बाइबल कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1972), 224. [3]*डिक्शनरी ऑफ़ जीज़स एंड द गॉस्पल्स,* संपा. जोएल बी. ग्रीन एण्ड स्कॉट मैक्नाइट (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोयस: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1992), 593 में क्लाइन आर. स्नॉज़ास, ''पेरेबल।'' [4]देखें प्रवक्ता ग्रंथ 39:2; 47:17; *1 एनोक* 1.2, 3; और मिशनाह *सोटह* 9.15. [5]सात गिनने वाले लोग 13:52 वाली कहावत को दृष्टांत नहीं गिनते, जबकि आठ गिनने वाले लोग इसे दृष्टांत मानते हैं। [6]एच. लियो बोल्स, *ए कमैंट्री ऑन द गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू* (नैशविल्ले: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1936), 305 से लिया गया। [7]आर. टी. फ्रांस, द *गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू,* द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 216 से लिया गया।